Märchenreihe der Migrationsabteilung

Die Taube und die durstige Ameise

Es war einmal im Sommer eine durstige Ameise, die nach Wasser suchte, um ihren Durst zu stillen. Nachdem sie eine Weile gesucht hatte, erreichte sie einen Fluss in der Nähe.

Es gab genügend Wasser im Fluss, aus dem sie trinken konnte. Trotzdem konnte sie nicht direkt in den Fluss treten. Also kletterte sie auf einen kleinen Stein. Aber sobald sie sich bückte, um etwas Wasser zu trinken, fiel sie in das Wasser rein.

Am Ufer desselben Flusses stand ein Baum, auf dessen Ast eine Taube saß. Sie bemerkte, dass die Ameise ins Wasser fiel. Die Taube hatte Mitleid mit ihr und beschloss, der ertrinkenden Ameise zu helfen. Also riss sie schnell ein Blatt vom Baum und warf es auf die kämpfende Ameise im Fluss.

Die Ameise kletterte auf das Blatt. Nach einer Weile erreichte die Ameise sicher und trocken das Flussufer, von dem sie schnell absprang. Sie schaute dann zum Baum und dankte der Taube, dass sie ihr das Leben gerettet hatte.

Ein paar Tage nach diesem Vorfall kam ein Jäger an das Ufer des Flusses. Er platzierte eine Falle in der Nähe des Taubennestes und legte ein Getreide hinein. Danach versteckte er sich ein wenig und hoffte, dass er die Taube fangen würde. Sobald die Taube das Getreide im Boden sah, kam sie herunter, um es zu essen, und geriet in die Falle des Jägers.

Die Ameise war in der Nähe. Sie bemerkte, wie die Taube versuchte, aus der Falle zu kommen. Dann griff der Jäger nach der Falle und ging los. Die Ameise entschied, dass sie etwas tun musste, um das Leben der Taube zu retten. So näherte sie sich schnell dem Jäger und biss ihm in sein Bein.

कबूतर और प्यासी चींटी

एक समय की बात है, गर्मियों के दिनों में एक चींटी बहुत प्यासी थी और वो अपनी प्यास बुझाने के लिए पानी की तलाश कर रही थी। कुछ देर आस –पास तलाश करने के बाद वह एक नदी के पास पहुंची।

सामने पानी था, लेकिन पानी पीने के लिए वह सीधे नदी में नहीं जा सकती थी, इसलिए वह एक छोटे से पत्थर के ऊपर चढ़ गई। लेकिन जैसे ही उसने पानी पीने की कोशिश की, वह गिर कर नदी में जा गिरी।

उसी नदी के किनारे एक पेड़ था, जिसकी टहनी पर एक कबूतर बैठा था। उसने चींटी को पानी में गिरते हुए देख लिया। कबूतर को उस पर तरस आया और उसने चींटी को बचाने की कोशिश की। कबूतर ने तेजी से पेड़ से एक पत्ता तोड़कर नदी में संघर्ष कर रही चींटी के पास फेंक दिया।

चींटी उस पत्ते के पास पहुंची और उस पत्ते में चढ़ गयी। थोड़ी देर बाद, पत्ता तैरता हुआ नदी किनारे सूखे आ गया। चींटी ने पत्ते में से छलांग लगाई और नीचे उतर गई। चींटी ने पेड़ की तरफ देखा और कबूतर को उसकी जान बचाने के लिए धन्यवाद किया।

इस घटना के कुछ दिनों बाद, एक दिन। एक शिकारी उस नदी किनारे पहुंचा और उस कबूतर के घोंसले के नजदीक ही उसने जाल लगा दिया और उसमें दाना डाल दिया। वह थोड़ी ही दूर जाकर छुप गया और उम्मीद करने लगा कि वह कबूतर को पकड़ लेगा। कबूतर ने जैसे ही जमीन में दाना देखा वह उसे खाने के लिए नीचे आया और शिकारी के जाल में फंस गया

वो चींटी वहीं पास में थी और उसने कबूतर को जाल में फंसा हुआ देख लिया। कबूतर उस जाल में से

Märchenreihe der Migrationsabteilung

Aufgrund der starken Schmerzen in seinem Bein ließ der Jäger plötzlich die Falle los. Die Taube nutzte diese Chance, befreite sich und flog schnell davon.

Lektion: Tue Gutes und dir wird Gutes getan

Die Taube hatte der Ameise geholfen und Dank derselben Hilfe rettete die Ameise in schwierigen Zeiten das Leben der Taube. Also ziehe dich niemals zurück, um jemandem zu helfen oder Gutes zu tun.

निकलने में असमर्थ था। शिकारी ने कबूतर का जाल पकड़ा और चलने लगा। तभी चींटी ने कबूतर की जान बचाने की सोची और उसने तेजी से जाकर शिकारी के पैर में जोर से काट लिया।

तेज दर्द के कारण शिकारी ने उस जाल को छोड़ दिया और अपने पैर को देखने लगा। कबूतर को जाल से निकलने का यह मौका मिल गया और वह तेजी से जाल से निकल कर उड़ गया।

सीख: कर भला, हो भला।

हम जब भी दूसरों का भला करते हैं, तो उसका फल हमें जरुर मिलता है। कबूतर ने चींटी की मदद की थी और उसी मदद के फलस्वरूप मुश्किल समय में चींटी ने कबूतर की जान बचाई। इसलिए कभी भी किसी की सहायता करने या अच्छा करने से पीछे न हटें।

Geschichte aus Indien, herzlichen Dank an Tina D'Souza für die Übersetzung